दलित साहित्य और विचारधारा

जगदीश्वर चतुर्वेदी

दलित साहित्य और विचारधारा

जगदीश्वर चतुर्वेदी

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जनवरी, 2025

© जगदीश्वर चतुर्वेदी

भूमिका

प्रस्तुत किताब वस्तुतः दलित केंद्रित विमर्श और विचारधारात्मक संघर्ष के क्रम में लिखे निबंधों का संकलन है। ये निबंध अलग-अलग समय पर लिखे गए थे। इधर-उधर बिखरे हुए थे। दलित साहित्यालोचना से जुड़े उन पक्षों की यहाँ पर विस्तृत आलोचना मिलेगी जिन पर विगत पचास साल से बहस हुई है। ये निबंध दलित साहित्यालोचना के नए आयामों को उद्घाटित करते हैं। दलित साहित्य को यहाँ विमर्श के बहस विचारधारा की अवधारणाओं और फ्रेमवर्क में विश्लेषित किया गया है। आशा है, दलित साहित्य के अध्ययन में यह पुस्तक मददगार साबित होगी।

जगदीश्वर चतुर्वेदी

अनुक्रम

दलित साहित्य और साहित्य के इतिहास दर्शन की समस्याएं	5
दलित साहित्य-विमर्श	91
दलित साहित्य की नई चुनौतियां	140
दलित साहित्य का नया पैराडाइम और नए सवाल	178
समग्रता और दलित का आभामंडल	209
नवजागरण और शूद्रों की मुक्ति के सवाल	226
दलित साहित्य के नए अर्थ की तलाश में	236
भीमराव अंबेडकर और जातिप्रथा की चुनौतियां	262
अस्मिता, अंबेडकर और रामविलास शर्मा	282
फ़ेसबुक और भीमराव अंबेडकर	305
भीमराव अंबेडकर, अन्ना हज़ारे और लोकतंत्र	311
दस मुख्य कठिनाइयां और अंबेडकर	315
धर्म, धर्मनिरपेक्षता, लोकतंत्र और अंबेडकर	317
अंबेडकर ने दूसरी शादी क्यों की?	321
अंबेडकर की पत्नी निष्ठा	323
धर्मनिरपेक्षता, धर्म की स्वतंत्रता, धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र और अंबेडकर	325

वर्चुअल नायकत्व और अंबेडकर 332

आरएसएस और अंबेडकर 339

ग़ुलामी का कलंकित रूप : हम क्या करें? 346

हिंदू समाज शर्मनाक समाज 348

आधुनिकता जनजातियां और वाम परिप्रेक्ष्य 352

आरक्षण फ़िल्म और खोखली दलित चिंताएं 394

सांस्कृतिक बंधुत्व से भागे हुए हिंदू 402

दलित साहित्य और साहित्य के इतिहास दर्शन की समस्याएं

साहित्येतिहास दर्शन में दलित साहित्य एकमात्र ऐसा साहित्य है जिसकी दार्शनिक प्रतिबद्धताएं जगजाहिर हैं। दलित साहित्यकार के नजरिए की धुरी है ज्योतिबा फुले-भीमराव अंबेडकर का नजरिया। इनमें अनेक लेखक ऐसे भी हैं जो मार्क्सवाद को भी मानते हैं। दलित साहित्य बड़ी मात्रा में उपलब्ध है, लेकिन दलित साहित्य का इतिहास हमारे पास नहीं है। किसी भी दलित आलोचक ने इस दिशा में प्रयास भी नहीं किया। जो भी प्रयास हुए हैं वे दलित साहित्य की विभिन्न विधाओं के संकलनों और संग्रहों तक सीमित हैं। दलित आलोचकों की इतिहास लिखने में दिलचस्पी कम और विमर्श या संवाद में ज्यादा है। दलित साहित्य के इतिहासदर्शन के लिए आवश्यक है कि उन अवधारणाओं का विवेचन किया जाए जिन्हें दलित साहित्यकार इस्तेमाल कर रहे हैं। इसके अलावा उन नई समस्याओं की ओर भी ध्यान दें जिन पर दलित लेखकों-आलोचकों ने कम विचार किया है।

दलित साहित्य की अवधारणा

दलित साहित्य वह है जो दलित ने लिखा है अथवा दलित पर लिखा है। इसमें दलित और गैर-दलित दोनों वर्ग के लेखकों का लेखन आता है। इस पदबंध के साथ भिन्न

किस्म का साहित्यिक आभामंडल सामने आता है। यह प्रचलित साहित्य-संसार से भिन्न है। इस पदबंध के प्रयोग के साथ ही साहित्य में निहित रहस्यात्मकता खत्म हो जाती है और समाज में व्याप्त सामाजिक वैषम्य के बारे में ध्यान जाता है। साहित्य माने आनंद, दलित साहित्य माने वैषम्य और अपमान की अनुभूतियों से संवाद। अपमान और सामाजिक वैषम्य के आभामंडल ने दलित साहित्य का आभामंडल बनाया है। फलत: यह साहित्य के समापन की घोषणा भी है। दलित साहित्य आने के बाद साहित्य के विषय, विमर्श और विवादों का बुनियादी पैराडाइम बदला है। इसके कारण साहित्य में निहित दलित-विरोधी साहित्यिक शैतानियों का उद्‌घाटन हुआ है।

दलित साहित्य पदबंध का प्रयोग करते ही हिंदू धर्म और उसके वैषम्यपूर्ण स्वरूप, वर्णाश्रम और जातिव्यवस्था के धार्मिक-सामाजिक विमर्श का समूचा परिदृश्य सामने आता है। मध्यकालीन हिंदू धार्मिकपाठ सामने आता है। उस पाठ की रोशनी में दलितों की सामाजिक जिंदगी, आख्यान परंपरा, विमर्श के सवाल, सामाजिक ऊंच-नीच, छूत-अछूत आदि सामने आ खड़े होते हैं। हिंदू धर्म के तमाम लक्षण और सामाजिक-आर्थिक फिनोमिना सामने आ जाते हैं। ये सारे एक ही पदबंध में बंधे नजर आते हैं वह है वर्णाश्रम व्यवस्था और एक ही धर्म वह है हिंदूधर्म।

दलित के लिए 'हिंदूधर्म' और 'वर्णाश्रम व्यवस्था' इन दो पदबंधों का भाषिक, धार्मिक और गैर-धार्मिक अर्थ है। वे इस विमर्श के बहाने साहित्य की उपेक्षित